an>

Title: Need to make arrangements to conserve Gopeshwar Shiv Mandir and Trishul in Chamoli district, Uttarakhand.

श्री अश्विनी कुमार चौबे: माननीय उपाध्यक्ष महोदय, भारतीय संस्कृति और सभ्यता से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा सदन में उठाना चाहता हूं। उत्तराखंड के देवभूमि स्थित चमौली के प्राचीन एवं प्रसिद्ध गोपेश्वर शिव मंदिर का शिखर वÂ◌ा◌ान जल के कारण क्षीण हो रहा है। साथ ही त्रेता युग के समय का लाखों Âन्न वर्ष पुराना शिव मंदिर का त्रिशूल एक पुरातत्विक अनूठी धरोहर के रूप में विद्यमान है। इसके उचित संरक्षण के अभाव में नÂट होने का खतरा बढ़ गया है। इस त्रिशूल पर देवलिपि ब्रह्मलिपि में महत्वपूर्ण जानकारियां दर्ज हैं किंतु भारतीय पुरातत्व विभाग अभी तक इसकी जानकारी लेने में असफल रहा है। शिव मंदिर का लाखों वर्षु पुराना त्रिशूल जो पुरातात्विक रूप से राÂट्रीय धरोहर के रूप में है, इसके संरक्षण के लिए बिहार राजगीर की एक संस्था, राजगीर पंडा समिति भारतीय पुरातत्व विभाग को एक प्रस्ताव दिया है, जिसमें संस्था ने त्रिशूल के संरक्षण में आने वाले व्यय को भी खुद ही वहन करने की बात कही है। संस्था से संबंधित जयनारायण सरस्वती ने दावा किया है कि त्रिशूल का उचित संरक्षण नहीं हो पा रहा है। त्रिशूल पर हुए वास्तविक रंग

को हटाकर उसकी जगह दूसरा रंग, केमिकल इस्तेमाल करने से क्षति हुई है। शिखर के मंदिर की छत टपकने लगी है जिससे शिव मंदिर के त्रिशूल का निर्मूल नÂट होने की कगार पर है।

अतः मैं पुरातत्व विभाग से मांग करता हूं कि श्री गोपेश्वर शिव मंदिर एवं त्रिशूल के संरक्षण हेतु कारगर योजना बनाए और प्राचीन विधि से त्रिशूल को संरक्षित किया जाए अन्यथा उक्त संस्था के दिए गए प्रस्ताव को स्वीकृत कर उन्हें सौंप दिया जाए।